विचार बिन्दु

काम, क्रोध, मद, लोभ सब, नाथ नरक के पंथ। –तुलसीदास

राजस्थान की लुप्त होती लोक कलाएं एवं सरकार द्वारा संरक्षण हेतु उपाय

राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में लोककलाएं इसका अभिन्न अंग हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं का जीवंत प्रतिबिंब हैं। कठपुतली, मांडणा, कावड़ चित्रकला जैसी ये कलाएं आधुनिकता की दौड़ में लुप्त होती जा रही हैं। युवा पीढ़ी डिजिटल मनोरंजन की ओर आकर्षित हो रही है, जिससे ये अमूल्य धरोहरें खतरे में पड़ गई हैं। राज्य सरकार इनकी रक्षा के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही है, ताकि ये कलाएं जीवंत बनी रहें। राजस्थान का रेगिस्तानी भूभाग और राजपूताना गौरव हमेशा से कला का केंद्र रहा है। यहां की लोककलाएं न केवल मनोरंजन का साधन थीं, बल्कि सामाजिक संदेश, धार्मिक कथाओं और ऐतिहासिक घटनाओं को जीवंत करने का माध्यम भी रहीं।

कठपुतली कला इसका प्रमुख उदाहरण है, जो राजा-महाराजाओं के काल में दरबारों में प्रस्तुत होती थी। लकड़ी, कपड़े और धागों से बनी ये कठपुतलियां रामायण-महाभारत की कथाएं सुनातीं, लोकगीत गातीं और नैतिक शिक्षा देतीं। जयपुर, उदयपुर और जोधपुर के पर्यटन स्थलों पर आज भी ये दिखाई देती हैं, लेकिन कलाकारों की घटती संख्या चिंता का विषय है। स्थानीय स्तर पर मोबाइल और सोशल मीडिया ने इनका स्थान ले लिया है, जिससे पारंपरिक प्रदर्शन कम हो गए हैं। कठपुतली कलाकार विकास भाट जैसे शिल्पकार बताते हैं कि परिवार चलाना मुश्किल हो गया है, क्योंकि आयोजन सीमित हैं। ये कलाकार अब पर्यटन पर निर्भर हैं, जो मौसमी होने के कारण अनिश्चित है।

मांडणा कला राजस्थान की प्राचीन चित्रकला है, जो दीवारों और फर्श पर चावल के आटे, चूने या गेरू से बनाई जाती है। त्योहारों जैसे दीपावली, होली और विवाहों पर महिलाएं घरों को सजाने के लिए पगल्या, थाम या चैकड़ी जैसे मांडणे बनातीं। ये ज्यामितीय आकृतियां और फूल-पत्तियों के चित्र समृद्धि और मंगल की प्रतीक हैं।आधुनिकता की चमक में प्लास्टिक सजावट ने इसे पीछे धकेल दिया। नई पीढ़ी इन्हें सीखने से कतरा रही है, क्योंकि स्कूलों में आधुनिक विषयों पर जोर है। ग्रामीण महिलाओं में भी यह कौशल लुप्त हो रहा है, क्योंकि वे अब बाहर काम करने लगी हैं।

कावड़ चित्रकला चित्तौड़गढ़ के बस्सी गांव की खासियत है, जहां मांगीलाल मिस्त्री जैसे कारीगर पीढ़ियों से इसे संरक्षित कर रहे हैं। यह लकड़ी का मंदिरनुमा बॉक्स है, जिसमें कई कपाट होते हैं। प्रत्येक कपाट पर रामकथा या अन्य लोककथाओं के चित्र उकेरे जाते हैं, जो कथा वाचन के दौरान धीरे-धीरे खुलते हैं। पर्यटक इनकी ओर आकर्षित होते हैं, लेकिन सस्ते मशीनी उत्पादों ने हस्तशिल्प की मांग घटा दी है। इसी प्रकार फड़ चित्रकला, जो कपड़े पर लोक देवताओं के चित्र बनाकर गाई जाती है, भी विलुप्ति के कगार पर है। ये चित्र भोपा समुदाय द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, जो पाबूजी या तेजाजी की कथाएं सुनाते हैं। लेकिन रिकॉर्डिंग और टीवी ने इन जीवंत प्रदर्शनों को प्रभावित किया है।

सरकार ने इन कलाओं के संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए हैं। राजस्थान सरकार की कला एवं हस्तशिल्प विभाग के तहत राजस्थान ललित कला अकादमी और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी सक्रिय हैं। ये हस्तशिल्प मेलों, प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं, जहां कारीगरों को बाजार उपलब्ध कराया जाता है। कठपुतली कला को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं चल रही हैं, जैसे प्राचीन काल की वीरता गाथाओं को पुनर्जीवित करना

लोकसंगीत और वाद्ययंत्र राजस्थान की आत्मा हैं। पश्चिमी राजस्थान के मांगणियार और लंगा समुदाय अपनी सरंगी, कमायचा और ढोलकी पर लोकगीत गाते हैं, जो उनके इतिहास और भावनाओं को संजोए रखते हैं। ये गीत सूखे, संघर्ष और प्रेम की कहानियां बयां करते हैं। लेकिन शहरीकरण, आधुनिक संगीत और युवाओं का रुझान पॉप-रॉक की ओर होने से ये परंपराएं खतरे में हैं। कई वाद्ययंत्र अब केवल संग्रहालयों में सजावट के लिए बचे हैं। मांगणियार कलाकारों का कहना है कि शादियों और मेलों में अब डीजे पसंद किए जाते हैं, जिससे उनकी आजीविका प्रभावित हो रही है।

इन कलाओं के लुप्त होने के कारण बहुआयामी हैं। सबसे बड़ा कारण आर्थिक है कारीगरों को उचित मूल्य नहीं मिलता, बिचौलिए शोषण करते हैं। बाजार में मशीनी नकलें सस्ती उपलब्ध हैं, जो हस्तनिर्मित वस्तुओं की चमक फीकी कर देती हैं। शिक्षा और शहरीकरण ने युवाओं को नौकरियों की ओर मोड़ा, जिससे पारिवारिक परंपराएं टूट रही हैं। पर्यटन पर निर्भरता मौसमी है, और डिजिटल मीडिया ने जीवंत प्रदर्शनों को हाशिए पर धकेल दिया। दस्तावेजीकरण की कमी से ये कलाएं गुमनामी में खो रही हैं। जलवायु परिवर्तन ने भी प्रभाव डाला है, क्योंकि रेगिस्तानी क्षेत्रों में कच्चे माल जैसे प्राकृतिक रंगों की उपलब्धता घट गई है। इसके अलावा, वैश्वीकरण ने विदेशी कलाओं को बढ़ावा दिया, जिससे स्थानीय परंपराएं दब गईं।

सरकार ने इन कलाओं के संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए हैं। राजस्थान सरकार की कला एवं हस्तशिल्प विभाग के तहत राजस्थान ललित कला अकादमी और राजस्थान संगीत नाटक अकादमी सक्रिय हैं। ये हस्तशिल्प मेलों, प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं, जहां कारीगरों को बाजार उपलब्ध कराया जाता है। कठपुतली कला को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं चल रही हैं, जैसे प्राचीन काल की वीरता गाथाओं को पुनर्जीवित करना। उदाहरण के लिए, जयपुर में कठपुतली महोत्सव आयोजित होते हैं, जहां सैकड़ों कलाकार भाग लेते हैं।

एएफसीपी प्रोजेक्ट के तहत एआईआईएस ने पश्चिमी राजस्थान की संगीत परंपराओं का दस्तावेजीकरण किया। युवा संगीतकारों को वरिष्ठ कलाकारों से प्रशिक्षण दिया गया, जिससे छह संगीत शैलियां विलुप्ति से बचीं। केंद्र सरकार का संस्कृति मंत्रालय और कपड़ा मंत्रालय हस्तशिल्प निर्यात को प्रोत्साहित कर रहे हैं। राजस्थान में राजस्थान हस्तशिल्प नीति के अंतर्गत कारीगरों को प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और ब्रांडिंग दी जाती है। उदाहरणस्वरूप, ब्लू पॉटरी, बगरू प्रिंट और अजरक जैसे हस्तशिल्पों को जीआई टैग मिला है, जो उनकी पहचान मजबूत करता है। जीआई टैग से निर्यात बढ़ा है, और विदेशी बाजारों में राजस्थानी हस्तशिल्प की मांग दोगुनी हो गई।

सरकार द्वारा संरक्षण के अन्य उपायों में डिजिटल दस्तावेजीकरण प्रमुख है। ऑनलाइन पोर्टल और ऐप्स के माध्यम से कलाओं का वीडियो रिकॉर्डिंग, वर्चुअल प्रदर्शन और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म विकसित किए जा रहे हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग ने राजस्थान आर्ट एंड क्राफ्ट ऐप लॉन्च किया, जहां कारीगर अपनी रचनाएं बेच सकते हैं। स्कूलों में पाठ्यक्रम में लोककलाओं को शामिल कर युवाओं को जोड़ा जा रहा है। पर्यटन विभाग होटलों और सर्किटों में कठपुतली शो अनिवार्य कर रहा है। पुरस्कार योजनाएं जैसे राजस्थान गौरव पुरस्कार कलाकारों को सम्मानित करती हैं। करोली जिले जैसे क्षेत्रों में पुरातत्व विभाग स्थानीय कलाओं को संरक्षित करने के लिए केंद्र से हस्तक्षेप मांग रहा है। इसके अलावा, आर्टिसन क्रेडिट कार्ड योजना से कारीगरों को सस्ता ऋण मिल रहा है, जिससे वे उपकरण खरीद पा रहे हैं।

इन प्रयासों से कुछ सफलताएं मिली हैं। कठपुतली अब शिक्षा और जागरूकता अभियानों में प्रयुक्त हो रही है, जैसे पर्यावरण संरक्षण पर नाटक। विदेशी पर्यटक इनकी ओर आकर्षित हैं, जो आय बढ़ा रहे हैं। मांडणा कला को आधुनिक डिजाइन में ढालकर फैशन इंडस्ट्री में जगह मिली है। लेकिन चुनौतियां बरकरार हैं निरंतर फंडिंग, मार्केटिंग और युवा प्रशिक्षण की आवश्यकता है। गैर-सरकारी संगठन जैसे इंटाच भी सहयोग कर रहे हैं, जो ग्रामीण स्तर पर वर्कशॉप चला रहे हैं।

भविष्य में संरक्षण के लिए सुझाव हैं। कारीगरों को डिजाइनरों से जोड़ना जरूरी है, ताकि आधुनिक उत्पाद बनें। कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी फंड का उपयोग कर फंडिंग सुनिश्चित करें। इको-टूरिज्म को बढ़ावा दें, जहां पर्यटक गांवों में रहकर कलाओं का अनुभव लें। स्कूल-कॉलेजों में वर्कशॉप अनिवार्य करें, ताकि नई पीढ़ी जुड़े। डिजिटल मार्केटिंग से वैश्विक बाजार खोलें, जैसे यूट्यूब और इंस्टाग्राम पर लाइव प्रदर्शन। आर्टिसन क्रेडिट कार्ड योजना को विस्तार दें और बीमा सुविधा जोड़ें। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प स्टॉल अनिवार्य करें। राजस्थान की ये कलाएं केवल सजावट नहीं, बल्कि पहचान हैं। इन्हें बचाना सांस्कृतिक संरक्षण के साथ आर्थिक सशक्तिकरण भी है। यदि ये धरोहरें जीवित रहीं, तो राजस्थान की सांस्कृतिक यात्रा जारी रहेगी।

अविनाश जोशी,
अतिथि संपादक,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार।

वैश्विक भू-राजनीति में भारत की भूमिका

राम शर्मा

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में वैश्विक भू-राजनीति गहरे बदलाव के दौर से गुजर रही है। शीत युद्ध के बाद बनी एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था अब धीरे-धीरे कमजोर पड़ रही है और उसकी जगह बहुध्रुवीय व्यवस्था आकार ले रही है। अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ जैसे शक्ति केंद्रों के साथ भारत जैसी उभरती ताकतें भी वैश्विक राजनीति की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभा रही हैं। इस बदलते परिदृश्य में भारत की भूमिका केवल एक क्षेत्रीय शक्ति तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वह अंतरराष्ट्रीय संतुलन और संवाद का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनता जा रहा है। इस पूरी प्रक्रिया में अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों का प्रभाव भी भारत की भूमिका को समझने में महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करता है।

भारत की विदेश नीति की बुनियाद गुटनिरपेक्षता और स्वतंत्र निर्णय क्षमता पर टिकी रही है। आज इसे रणनीतिक स्वायत्तता कहा जाता है। इसका अर्थ है कि भारत किसी एक महाशक्ति के प्रभाव में आए बिना अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप संबंध बनाता है। डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में अमेरिका की विदेश नीति में स्पष्ट रूप से अमेरिका फर्स्ट का दृष्टिकोण देखने को मिला। इस नीति ने वैश्विक संस्थाओं, व्यापार समझौतों और पारंपरिक गठबंधनों को भी प्रभावित किया। ऐसे समय में भारत ने अमेरिका के साथ सहयोग बढ़ाते हुए भी अपनी स्वतंत्रता बनाए रखी, जो उसकी परिपक्व विदेश नीति को दर्शाता है।

वैश्विक भू-राजनीति में भारत की बढ़ती अहमियत का एक बड़ा कारण उसकी आर्थिक और जनसांख्यिकीय ताकत है। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी, विशाल उपभोक्ता बाजार और तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्था भारत को वैश्विक निवेश और रणनीतिक साझेदारी के लिए आकर्षक बनाती है। ट्रंप प्रशासन के दौरान अमेरिका ने चीन के खिलाफ कड़े व्यापारिक कदम उठाए और टैरिफ युद्ध को बढ़ावा दिया। इस व्यापारिक टकराव का अप्रत्यक्ष लाभ भारत को मिला, क्योंकि वैश्विक कंपनियों ने चीन के विकल्प के रूप में भारत की ओर भी देखना शुरू किया। हालांकि, ट्रंप की संरक्षणवादी नीतियों ने भारतीय निर्यात पर कुछ दबाव भी डाला, जिससे भारत को अपने आर्थिक हितों के लिए नए रास्ते तलाशने पड़े।

भारत-अमेरिका संबंध ट्रंप काल में एक नए चरण में प्रवेश करते दिखाई दिए। एक ओर ट्रंप भारत की रणनीतिक अहमियत को स्वीकार करते थे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी व्यक्तिगत केमिस्ट्री भी अक्सर चर्चा में रही। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच सहयोग बढ़ा और बड़े रक्षा समझौते हुए। दूसरी ओर, ट्रंप का सख्त व्यापार रुख, वीजा नीतियों में बदलाव और टैरिफ को लेकर विवाद भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव के बिंदु भी बने। इन विरोधाभासों के बीच भारत ने संतुलन बनाए रखा और यह दिखाया कि वह भावनाओं नहीं, बल्कि हितों के आधार पर संबंध तय करता है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र की राजनीति में ट्रंप की नीतियों का असर विशेष रूप से देखा गया। चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए अमेरिका ने हिंद-प्रशांत रणनीति को आगे बढ़ाया, जिसमें भारत की भूमिका केंद्रीय रही। क्वाड जैसे मंचों को सक्रिय करने में ट्रंप प्रशासन की भूमिका रही और भारत ने इसे अपने क्षेत्रीय हितों के अनुकूल पाया। इससे भारत की वैश्विक भूमिका और जिम्मेदारी दोनों बढ़ीं, क्योंकि उसे केवल अपने हित ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता के बारे में भी सोचना पड़ा।

चीन के संदर्भ में ट्रंप की नीतियों ने वैश्विक भू-राजनीति को और जटिल बनाया। अमेरिका-चीन टकराव ने दुनिया को नए ध्रुवीकरण की ओर धकेला। भारत ने इस स्थिति में सावधानीपूर्ण रुख अपनाया। उसने अमेरिका के साथ रणनीतिक सहयोग बढ़ाया, लेकिन चीन के साथ संवाद के रास्ते भी खुले रखे। सीमा विवाद और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के बावजूद भारत ने यह स्पष्ट किया कि वह किसी नए शीत युद्ध का हिस्सा नहीं बनना चाहता। यही संतुलन भारत को एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करता है।

रूस के साथ भारत के संबंधों पर भी ट्रंप युग की वैश्विक राजनीति का असर पड़ा। ट्रंप प्रशासन का रूस के प्रति रुख कई बार विरोधाभासी रहा, लेकिन पश्चिमी देशों के प्रतिबंधों का दबाव भारत पर भी परोक्ष रूप से महसूस किया गया। इसके बावजूद भारत ने रूस के साथ अपने पारंपरिक संबंध बनाए रखे, खासकर रक्षा और ऊर्जा के क्षेत्र में। यह भारत की रणनीतिक स्वायत्तता का स्पष्ट उदाहरण है, जिसने उसे वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र आवाज दी।

वैश्विक दक्षिण में भारत की भूमिका ट्रंप काल के दौरान और अधिक महत्वपूर्ण हो गई। अमेरिका के संरक्षणवादी रुख और वैश्विक संस्थाओं से दूरी बनाने की प्रवृत्ति के कारण विकासशील देशों को नए नेतृत्व की तलाश थी। भारत ने इस खाली जगह को भरने की कोशिश की। विकास सहयोग, तकनीकी सहायता और मानवीय मदद के जरिए भारत ने एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में अपनी उपस्थिति मजबूत की। बाद के वर्षों में यह भूमिका और अधिक स्पष्ट होकर सामने आई।

भारत की सॉफ्ट पावर भी उसकी वैश्विक भूमिका को मजबूती देती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था, सांस्कृतिक विविधता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की परंपरा भारत को अन्य देशों से अलग पहचान देती है। ट्रंप के दौर में जब अमेरिका की छवि कई वैश्विक मुद्दों पर विवादास्पद बनी, तब भारत ने संवाद, सहयोग और बहुपक्षीयता पर जोर देकर खुद को एक संतुलित विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया।

हालांकि, भारत के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। पड़ोसी देशों के साथ तनाव, सीमा सुरक्षा, आतंकवाद और वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताएं उसकी विदेश नीति की परीक्षा लेती हैं। इसके साथ ही, घरेलू आर्थिक और सामाजिक मजबूती भी वैश्विक भूमिका की विश्वसनीयता से जुड़ी है। यदि भारत को विश्व मंच पर प्रभावी बने रहना है, तो उसे आंतरिक विकास और समावेशी प्रगति पर निरंतर ध्यान देना होगा।

निष्कर्षतः, वैश्विक भू-राजनीति में भारत की भूमिका आज एक संतुलनकारी और संवादकारी शक्ति की है। डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों ने जहां दुनिया में अनिश्चितता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया, वहीं भारत के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों पैदा कीं। भारत ने इन परिस्थितियों में धैर्य, विवेक और रणनीतिक स्वायत्तता के साथ अपनी राह चुनी। आने वाले समय में यदि भारत इसी संतुलित दृष्टिकोण पर आगे बढ़ता है, तो वह न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करेगा, बल्कि वैश्विक शांति, स्थिरता और सहयोग में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

-राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा"

डॉ. जे. के. गर्ग

जन-जन के नायक महान स्वतन्त्रता सेनानी नेता जी कहते थे कि राष्ट्रवाद मानव जाति के उच्चतम आदर्शों सत्यम, शिवम, सुन्दरम से प्रेरित होना चाहिये। उन्होंने हमें अपने जीवन में सदेव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी थी चाहे हमारा सफर कितना ही भयानक, कष्टदायी दुखी और बदतर हो। सुभाष बोस ने हमें संदेश दिया था कि सफलता, हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है।जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वो आगे बढ़ते हैं किन्तु उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। नेताजी ने बतलाया कि मेरा अनुभव है कि हमेशा आशा की कोई न कोई किरण आती है, जो हमें जीवन से दूर भटकने नहीं देती।

नेताजी बार बार बोलते थे कि अन्याय और अपराध को सहना और गलत के साथ समझौता करना है सबसे बड़े पाप हैं। भारतीयों का कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा तीन आदर्शों को संजोना और उन पर जीना होगा ये आदर्श हैं सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान। जो सिपाही हमेशा अपने देश के प्रति वफादार रहता है, जो हमेशा अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है, वो सिपाही अजेय है। अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने ह्रदय में समाहित कर लो।

आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जन नायक सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहाँ हुआ था। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने से एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। वहाँ 20 जुलाई 1921 को गांधी जी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब इस अधिवेशन के अन्दर तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया था उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। उन्होंने भारतवासियों को "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा दिया था जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क में गूंज रहा है।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्छेको और आयरलैंड समेत 11 देशों ने मान्यता दी। जापान ने अंडमान व निकोबार द्वीप इस अस्थायी सरकार को दे दिये। सुभाष उन द्वीपों में गये और उनका नया नामकरण किया। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कहा तभी गांधीजी ने भी उन्हे नेताजी कहा, तभी से उन्हें नेताजी कहा जाने लगा। नेताजी ने कहा था कि हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। 23 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बड़े बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदाई, पायलट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहाँ उन्होंने अंतिम श्वास ली और नेताजी पंच महाभूतों में विलीन हो गये। सितम्बर के मध्य में उनकी अस्थियाँ संचित करके जापान की राजधानी टोक्यो के रेगोंजी मंदिर में रख दी गयी भारतीय महालेखाकार से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि ग्यारह बजे हुई थी।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद करने के नेताजी का प्रयास हालांकि प्रत्यक्ष रूप में सफल नहीं हो सका था किन्तु उनका दूरगामी परिणाम हुआ। सन् 1946 के नौसेना का विद्रोह इसका जीता जागता प्रमाण है। नौसेना विद्रोह के बाद ही ब्रिटेन को विश्वास हो गया कि अब भारतीय सेना के बल पर भारत में शासन नहीं किया जा सकता और भारत को स्वतंत्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा। आजाद हिन्द फौज को छोड़कर विश्व-इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं मिलता जहाँ तीस-पैंतीस हजार युद्धबंदियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा प्रबल संघर्ष छेड़ा हो। सुभाष चंद्र बोस के उनके संघर्षों और देश सेवा के जज्बे के कारण ही महात्मा गांधी ने उन्हें देशभक्तों का देशभक्त कहा था। नेताजी मानते थे कि जिस व्यक्ति के अंदर सनक नहीं होती वो कभी महान नहीं बन सकता। लेकिन उसके अंदर, इसके अलावा भी कुछ और होना चाहिए।

आजाद हिंद सरकार के 75 साल पूर्ण होने पर साल 2018 मे पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त के अलावा लाल किले पर तिरंगा फहराया। प्राप्त सूचनाओं के मुताबिक नेताजी के 125 वें जन्मदिवस के उपलक्ष में भारत सरकार 2022 के गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ 24 जनवरी के बजाय 23 जनवरी से करने की योजना बना रही है।जन जन के दुलारे नेताजी का जन्मदिन देश में पराक्रम दिवस के रूप में मनाया जाता है। जन जन के दुलारे नेताजी के 23 जनवरी 2025 को राष्ट्र उन के 128वें जन्म दिन पर उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

डॉ. जे. के. गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर।

डीडवाना : मर्यादा महोत्सव में मोहन भागवत ने शिरकत की

आचार्य श्री महाश्रमण ने सत्य की खोज, अहिंसा और करुणा के महत्व पर जोर दिया

डीडवाना, (निसं)। कुचामन जिले के छोटी खाटू में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ, जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और जैन धर्म गुरु आचार्य श्रीमहाश्रमण विशेष रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. मोहन भागवत ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और मंच से संवाद किया। कार्यक्रम में देशभर से आए श्रद्धालु, तेरापंथ समाज के प्रवासी सदस्य और संघ कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहे, जिससे कस्बा धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण से सराबोर नजर आया। आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने संबोधन में सत्य की खोज, अहिंसा और करुणा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि संतों की वाणी और ग्रंथों के संदेश से जीवन की दिशा बदली जा सकती है। उन्होंने कहा कि जब हम सबको अपना मानकर चलते हैं, तभी मर्यादा और अनुशासन जीवन

■ संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मर्यादा, अनुशासन और संतुलन को राष्ट्र प्रगति की नींव बताया

में उतरता है। उन्होंने कहा हमे अहिंसा पर कायम रहना चाहिए ,लेकिन मजबूरी हो जाए तो फिर शस्त्र उठाना भी जरूरी है।

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मर्यादा, अनुशासन और संतुलन को राष्ट्र प्रगति की नींव बताया। उन्होंने कहा कि लिखित और अलिखित नियमों का पालन और नागरिक अनुशासन मजबूत होगा तो अपराध घटेंगे और व्यवस्था सुदृढ़ बनेगी। उन्होंने कहा कि कई समस्याओं का समाधान केवल कानून से नहीं, बल्कि धर्म और नैतिक मूल्यों से होता है। भागवत ने कहा कि आज दुनिया स्वार्थ की सोच पर चल रही है, लेकिन भारत की परंपरा इससे अलग है। भारत केवल अपने हित की नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की चिंता करता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि भारत ने बिना स्वार्थ पाकिस्तान की बाढ़, मालदीव और श्रीलंका जैसे देशों की मदद की। कार्यक्रम के बाद डॉ. मोहन भागवत ने संघ कार्यकर्ताओं के एकत्रीकरण में भाग लिया। मंच पर अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख अरुण जैन, क्षेत्र कार्यवाह जसवंत खत्री, क्षेत्र प्रचारक निंबाराम सहित अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी भी मौजूद रहे। अंत में आयोजन समिति की ओर से संघ प्रमुख मोहन भागवत का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया।

कुचामन जिले के छोटी खाटू में जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के 162वें मर्यादा महोत्सव में स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत और जैन धर्म गुरु आचार्य श्रीमहाश्रमण उपस्थित रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

राशिफल 23 जनवरी 2026

माघ मास शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम सम्वत 2082, पूर्वाभाद्रप्रद नक्षत्र दिन 2.33 तक, परिघ योग दिन 3.59 तक, बवकरण दिन 2.07 तक चन्द्रमा प्रातः 8.34 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति :- सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मकर, बुध-मकर, गुरु-मिथुन, शुक्र-मकर, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतू-सिंह राशि में संचार करेगा।

कुमार योगः- सूर्योदय से दिन 2.33 तक है रवियोग दिन 2.33 से आरम्भ होगा। आज बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, पंचमी पाटोत्सव राधा गोविन्द जयपुर है। आज तक्षक पूजा, रतिकाम महोत्सव, पंचक हैं।

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग-दौड रहेगी।

वृष
आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा सम्भव है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करे। अटके हुए कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज बनते कार्य बिगड सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार में अथितियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सम्भव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल आत्मविश्वास बडेगा। आवश्यक ओर महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुगमता से बनने लगेंगे।